

स्वनामावकाश

तथा दोषं दालं गन्धविवि
धाकालिखेन ॥ वसथो
कलेसख २ मंचरतायथा
नायम्नाप्रतिव्रतपतिता
वचारुमता सल्लभननुका
लकासकोठ ॥ यिखालं
षम ॥ जवखवसुपल
वायाव कल्लनतय ॥ थ
कालिनलंसाय ॥ नमच
नादि ॥ डं नकादुर्ल ॥ वलि
डं भूक्ष वाच ॥ डं तंआसि ॥
मतातालवायूजायाया ॥ डं
तंआसि ॥ डं लंजविष्णु ॥

उडुनिमिवकानासियक वलिनव

धम्मसियक

वाचन॥ कलंकच्छाय॥
वामतातयाव॥ लभयवि
यमधूनसाधूनक॥ आस
लक्ष्मचासचाळ॥ लभय

वृद्धिदयूजा॥ अथाया॥
यथा॥ वाक्॥ कुरुमानस्य
अमकस्यगुणविविवाहा
दणवाक्केलिकाकुण्डीप्रीसू
यायनुवाधानुम॥ ॐ श्री
कुरु॥ यादार्थ॥ रुसाय॥
पूषजकापवीरक्षपदीय
॥ दक्षिण॥ वाचन॥ कल
सलखनमूरि॥ लघविथ
कलसयागादीदमानरि

कुरुमनस्यअमकस्यगुणं
वतिवाहासंयुक्तनिमि
त्या॥ धनमूरि॥ लघसमूरु
रुमसु॥ ॐ धवस्यत्वा॥ ॐ
मूर्ध्निनारुव॥ वन्दन॥ सि
धून॥ पूषा॥ ॐ ध्रुवासि॥
धमकालिठुवाकाय॥
सैरुसर्वेषांकल्यानम
सु॥ स्वानचक्रुलनच
यक॥ साक्षि॥ धमय॥ वा
क्क॥ कुरुकर्म॥ लंघीसू
यायमूर्धनम॥
ॐ निगंधविविवाहा॥
ॐ श्रीवर्कजजा॥ धमकालिआदिस्त

अथ वरुथी कर्म॥
कलसयुगायायमर्ज
नाथी॥ अकमानयुष्य
राकनथा कालिन॥
अथादि॥ वाक॥ अकमा
नस्य अमूकस्य वधूच
ठथी कर्मसि कर्तव्यधन
निमित्याथ नियुष्यरुक्
नसमर्पयामि॥ अथ॥ सु
दसार्त॥ सिद्धिनकु॥ अ
थवाना॥ सुयुक्तकल
मययुष्यसमर्पयामि
दधियावकाय॥ स्वस्मन
कथयालायभंगनाय

२१
गृहागम्यांकोमात्रिदं
वीर्यश॥ नैदिकधना
या॥ अथायाय॥ रात्रि
रु॥ गम्याय वधूदवता
यत्रिदुर्गुदसकमंद
लूयुष्यराकनसमर्पय
मि॥ नायायसायात्त॥
सूर्याय॥ अथादि॥ वा
क॥ कर्तुं प्रीसूर्याय अ
र्धनम॥ भार्ताधकान
मग्मनां जनानां कानन
मिहि॥ कतमूर्धनन
यनतं नो मिनिवराका
व॥ प्रीसूर्याय अर्धन

ॐ न्द्रा यनमस्यादि॥

ॐ द्वाता नमिन्द्रस्यादि॥

लाकपालार्चनं य

त्रिपूर्नममु॥

तताविप्रंजीवार्चनं॥

सुप्रसन्नमनमस्यादि॥

ॐ सुप्रसन्नवाद्यादि॥

सुप्रविप्रंजीवार्चनं य

त्रिपूर्नममु॥ ततामासा

मासायनमस्यादि॥

ॐ सुप्रमासाद्यादि॥

आवानाद्यामासादिय

कार्चनं यत्रिपूर्नममु॥

ततादधियावकार्चनं॥

ॐ दधिकाप्राद्यादि॥

दधियावकार्चनं यत्रिपूर्

नममु॥

तताचन्द्रमउत्तार्चनं॥

ॐ वय० सामवत॥

ॐ दीर्घायस्त्रा॥

ॐ हृष्टवस्त्र॥ सुप्रमा॥

ॐ श्रीश्रुत॥ ॐ प्रद्वारा॥

ॐ यविप्र॥ ॐ हि नव्येगा॥

ॐ डाषधेया॥ ॐ निवा॥

ॐ यविप्र॥ ॐ यूरुक्ति॥

ॐ वसा॥ यविप्र॥

चन्द्रमउत्तार्चनं यत्रिपूर्

नममु॥ ततावत्त्यर्चनं॥

ॐ स्वस्ति नमस्तुभ्यं ॥

मन्वाप्रालको॥

नमो नमो ॥ वन्दे नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥

दीया गुं नं मा मि॥

लीखनहाया॥ दवसा
खानननकंकलमदि॥
भनिकखानविथा॥ ठं
ओ४भनिक॥ मालवा, म
मायूजा॥ ठं लंरवि॥ ठं भजा
सि॥ वाया॥ रु, तालचसि
गानचंद्रमछल॥ स्वसि
वाचनयठय॥ संयाया॥
वसिवलानसांसावाथया॥
यनकंविनसंथाया॥
ठं ठं ठं वख४सूपका४॥
गवनखवमलकंसंथा
या॥ दधूयाथंभाचकं
साकंथाया॥ स्वसिवाच

न॥ सिंधकया॥ कलस
आदिनतानपूरखन॥
मीयाकं॥ ठं श्रीप्रभ॥ था
ठ३॥ कूफनीका॥ ठं नका
द्यामका॥ ठं यविप्रका॥
लंडाकाखो॥ ठं दि
वद्य॥ ठं डा यधयाय॥
डाविनिसि॥ ठं निवाना॥
कूफवसाय॥ वक्रनस्य॥
ग्रीकलंडलक॥ ठं य३३३३
ग्रीकलसालावसिवलार्क
कायेमाउसतया॥ यासव
य॥ ठं यविप्रका॥ चंदना
दि॥ सरुं आत्रता॥ पतिष

समयश्च य॥ कलसस्र
दिन॥ अन्नसं कल॥
दक्षिण॥ कलसस्र
नकुम्भप्रयुक्त॥ वाचना
ब्रह्मचर्यन॥ उ॥ अक्षिप्र॥
वलि॥ उ॥ चर्तयगया॥
न्यासलिकाय॥ कलस
दिविसकन॥ उ॥ उद्ययग॥
युक्तकृष्णकलपूजा
वारिकन॥ उ॥ कालि
कलसाहिष्णव॥ वंदना
दिग्भासिर्वाद्य॥ उ॥ ध्ववासि
त्यादि॥ स्नानमुवाप्ताय॥
साक्षि॥ धर्म॥ कर्मकर्म

साक्षि॥ षष्ठीसूर्यायमूर्ध्व
नमः॥ मृदुप्रययाता
समवाविथ॥ उ॥ कलश
सिन्धुआर्ययाता॥ कस
तयकलपूजा॥
वृत्तिचतुर्थीकर्मसमय॥

मृथगरादानं॥
मृदुप्रयवतीकलपूजा
स्नानयाचकंतय॥ सि
धकृष्ण॥ मृदुप्रयवती
कलपूजादिनस्नानवृथ
क॥ किमनिद्रकृष्ण
लसि॥ याचकंतयलक

यकं तय॥ यद्यवायाध
वनकायलासुतं खतय॥
यवनकसंकनसधतन
यद्यवाया॥ यतस्वानश्वला
नकाचन्दननकायूष्यन
कसकायवीत॥ वाक्कन
नयूजायाया॥ मसना॥
वावाचन॥ उं नखायामि
त्यादि॥ ययश्चलि॥ यी
सूर्यायनम३॥ दययाय
नमयादि॥ उं म्माकक॥
उं स्वस्तिनून्त्यात्यादि॥
धूपदीया॥ मृगं धादि॥
ययाकाया॥ कवाकसूम॥

मृगं धादि॥ गहनयूयाव
कीरुय॥ स्वस्ति कसुतय॥
यैत्रगव्यविय॥ मृगं याय
का॥ ताप्रयाय॥ वकयं पन
दूदमृकन॥ सुवर्णुल
ता॥ म॥ धनतय॥ मृगवा
लाहकल्या॥ तावायाय
वर्गंधं वदूगमकनसुव
नर्क॥ दूर्वाकुलसमायू
कं गृहानार्थं दिवाकन॥
भाय॥ मृगं गमदि॥ सूर्य
दर्शन॥ मताविश्वकवात
१२॥ विसर्जनी॥ उं उद्यय॥
स्वानविय॥ कीनवाधाव

सदाकृतया॥ॐ यद्ययाना
 ॐ वसा॥४५॥ॐ हि न स्याव व
 याकवलिकु॥ॐ साध
 गा॥ॐ मूर्त्तनमया॥ॐ क
 वलंगतउजि॥ॐ दी
 धयिस्वा॥ॐ साकमि॥ग
 ला॥ॐ मयसकोमि॥ॐ
 क्रसकन॥सैधम॥ॐ समि
 ॐ धीर्ग॥ॐ वउस्तुति॥यादि
 वृषदीय॥ॐ मृगधमि॥
 यपका॥ॐ सुदधमका॥
 स्तन॥ॐ स्वकी॥ॐ रूदव॥
 वृद्धनपूजा॥ॐ मन्त्रिका॥
 मामवयकाव॥मात्रालंसा
 यावदुय॥ॐ स्वस्तिकसगय
 ववधि॥ॐ मृगयन्त्रा॥ॐ कवी॥ॐ

ॐ यद्ययाना॥ॐ वसा॥४५॥ॐ हि न स्याव व
 याकवलिकु॥ॐ साध
 गा॥ॐ मूर्त्तनमया॥ॐ क
 वलंगतउजि॥ॐ दी
 धयिस्वा॥ॐ साकमि॥ग
 ला॥ॐ मयसकोमि॥ॐ
 क्रसकन॥सैधम॥ॐ समि
 ॐ धीर्ग॥ॐ वउस्तुति॥यादि
 वृषदीय॥ॐ मृगधमि॥
 यपका॥ॐ सुदधमका॥
 स्तन॥ॐ स्वकी॥ॐ रूदव॥
 वृद्धनपूजा॥ॐ मन्त्रिका॥
 मामवयकाव॥मात्रालंसा
 यावदुय॥ॐ स्वस्तिकसगय
 ववधि॥ॐ मृगयन्त्रा॥ॐ कवी॥ॐ

दर्शनीं न कृदय ह।
 आत्मविम्वक्षनीयन
 संप्रदायकयायन॥
 साक्षिभय॥ नाक॥
 केतकर्मसाक्षि। ए। प्री
 मूयायमूर्धनमधूय
 तमहा॥ नृति कलम॥
 र्नीममार्क॥ संम्वत॥
 १४१॥ यदयदमाभ॥
 पुत्रायकमृदूमयीति
 (शैलिवितपीनामन
 दनाज्ञायाभ्या॥ ॥

ॐ त्रिकुट्या ॥ ॐ नमः ॥
 ॐ हृदयविष्णु ॥ ॐ वरुणा
 ॐ श्यामाल ॥ ॐ श्रुम्भ ॥
 ॐ श्रीश्रुत ॥ ॐ नमो ॥
 ॐ याम्याया वलि ॥
 ॐ कुरु ॥ मूलतया ॥ द
 दिना सचाठ नवतया
 ॐ कुरु ॥ वक्रिष्णुया
 ॐ लसाउ लक्ष्मीश्व
 ॐ मंथ्या ॥ ॐ गलनीत्वा ॥
 ॐ लालाद्या ॥ ॐ जसंख्या
 ॐ वक्रलादवी ॥ ॐ वरुणा
 ॐ लक्ष्मीश्व ॥ ॐ नमो ॥

मूलपातस्यप्रिमड
रुच। रालाश्चाळा०
धृष्ट्यामूलन॥
१०० याडाषधा४सा
मत्राद्भिर्वक्ता४क्षा
विद्यदाव४गसाम्ना
सिखमूकमानंकाभा
यथा० न० रुच॥१॥

सत् ॥ यथैकनसंयुक्त ॥ ॐ
उक्तं वरुनी नमः गंतुं
यय ४ ॥ कीलालं यत्रि ॥
तं ॥ स्वधामस्तुतय्यतामयि
एन ॥ ॐ तिष्ठलधमनां यथा
दु ॥ ॥

गता यथा कर्मका यथा ॥
थंकादि नकिनीनकर्मयो
यदंलासालाडा ॥ स्वस्ति
कपी ॥ यथयत्रिवंशवकीत
॥ निम्नं नंदत्वा ॥ ॐ नदी
हनी ॥ वलिप्रदानं ॥ ॐ नृ
धवा ॥ दीयप्रदानं ॥ ॐ

तं ज्ञासि ॥ ॐ ॥ गानयन
॥ ॐ नव वायुष्ट ॥ लं रवन
हाय ॥ ॐ दवस्मत् ॥ ॥
स्वानक ॥ मण्डनक ॥ धा
उसमारु कादि ॥ ॐ द्यादि ॥
नव दवता ॥ कपिलादि
यं व ॥ ममारु कारु ॥ ॐ द
मासनं व ॥ ॐ ॥ यथा ॥ ॐ ॥
॥ नव वन्दनयथायवीतः
यथा ॥ धूप ॥ दीप ॥ न्ययात ॥ ॥
मितं ॥ ॐ ॥ ता ॥ या ॥ म ॥ नन
त्याय ॥ ॐ स्वस्ति वाचनं प
थेत् ॥ गतवृत्ति कावाय ॥

ॐ नमो हनं ॥ ॥ काठु १०२
॥ चन्दनादि त्रिणा वदिवि
य ॥ वाक्कद किम्भदानं
॥ वाचनं ॥ वाक्कदनवदा
वर्नं ॥ ॐ त्रय ॥ ॐ त्र
नवदस ॥ ॐ नमो ग ॥ ॐ
॥ ॐ ग ॥ ॐ त्र ॥ ॐ वृ
स्तय ॥ ॐ नमो सुस्तय
॥ ॐ समस्तय ॥ ॐ यामा
॥ ॐ त्रिवदा वर्नं ॥ ॥ अ
रिषक ॥ ॐ दवस्त ॥ ॥ च
न्दनादि त्रिणा वदिवि ॥
ॐ यामि लिनी ॥ ॥ अत्र ॥ ॥

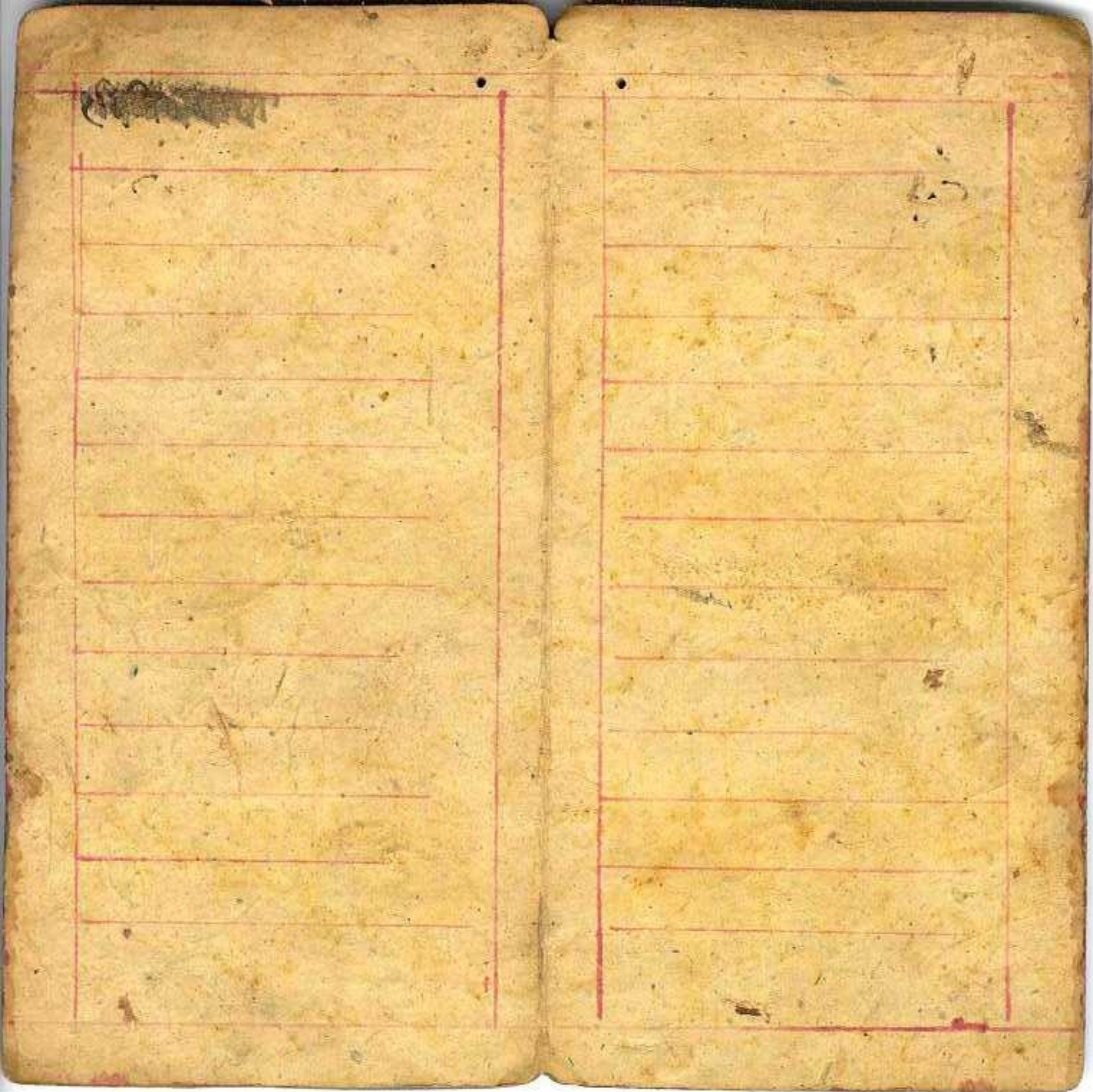
ॐ त्रिणा सि ॥ ॥ प्रमि ॥ ॥ ॐ
मन ॥ ॥ त्रिणा ॥ ॥ ॥
यवाक विस्तर्नं कृत्वा
॥ ॐ दवाग ॥ ॥ वाद ॥
माह कासगयासि
नूनकाय ॥ सकल
मूना ॥ ॐ द ॥ ॐ रुवि
॥ ॥ ॐ ग ॥ ॥ सादियूजातय
कल ॥ ॥ त्रिणा ॥ ॥ त्रिणा
दि ॥ ॥ क ॥ ॥ यामि ॥ ॥ मि ॥
थकादिस्तलासोला ॥ ॥ मा
सद्य ॥ ॥ यातका ॥ ॥ ॥
यन ॥ ॐ सुस्तय ॥ ॥ ॥

स्तिकसर्गः॥ राजनयातकं
॥ ब्राह्मणादिराजनी ॥
भक्तवन्दिकाहल्लिखितः
स्मृताः ॥ ॥ अथ इत्यलया
विधिसमायुक्ताः ॥ ॥
ॐ नमः ॥
१ॐ नवो नवो भवति जाः
यमानो ह्यंकेतुरुषसामे
त्यग्रे ॥ भागं देवेभ्यो वीः
दधात्यायं प्रचन्द्रमास्त्य
दति दीर्घमायुः ॥ १ ॥ ॐ
नवो नव इति नवः नवः
भवति जायमानः जाय

मानो ह्यंकेतुः केतुः
रुषसां उपसामेत्यग्रे अ
ग्रे इत्यग्रे भागं देवेभ्यः
देवेभ्यो वीः दधात्यायं
प्रचन्द्रमास्त्यनुमास्त्यद
तित्यदति दीर्घमायुः
ः आयुः आयुरित्पायुः ॥
ॐ नय देवे विशे तत्रय
दैव कर्माणि जुहति स
दस्यान्नेव तत्प्रीणाति अ
स्मै देवा सो वुवुत्सते ॥ तौ
दम्यतीतौ दम्यती वाम ए
धिते ग्रह असीदयतौ

दम्यतीपुमान् विन्दते ॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसीह
शायिने नमो वयं वैश्रव
णाय कुर्महे स मे कामा
काम कामाय महं का
मे श्वरो वैश्रवणे ददातु
कुवेराय वैश्रवणाय म
हाराजाधिराजाय वै न
मः ॥ ॐ नैयग्रोधपादे न
मित्रो राजन्नाभिषिञ्चति
परिर्वै नग्रोधप्रतिस्थितो
मित्रेण वै राजन्ः प्रतिस्थि
तस्तस्मान्नैयपादे नमि

त्रो राजन्नाभिषिञ्चति ॥
ॐ आयुर्मैपाहिप्यारण
मैपाह्यपानमैपाहिष्वा
नमैपाहिन्वदुर्मैपाहि
श्चान्नमैपाहिच्चान्नमै
पिन्वमनोमैजिन्वात्कमा
नमैपाहिञ्जोतिर्मैय
ह ॥ ॥



एजादि र्येनकायायादीवयभोर्मगथिवय। कुरुर्मगमनर्कं रुद्रीणीयलुवक्षमवय।
 यदंजावयुर्नविद्यादजगर्धरागोवी। लार्हंननेध्वर्नरुद्रीरुतिवाकमथिवय
 मसीकंरुसमायुक्तंमिथगपुलाकका॥

मा ३

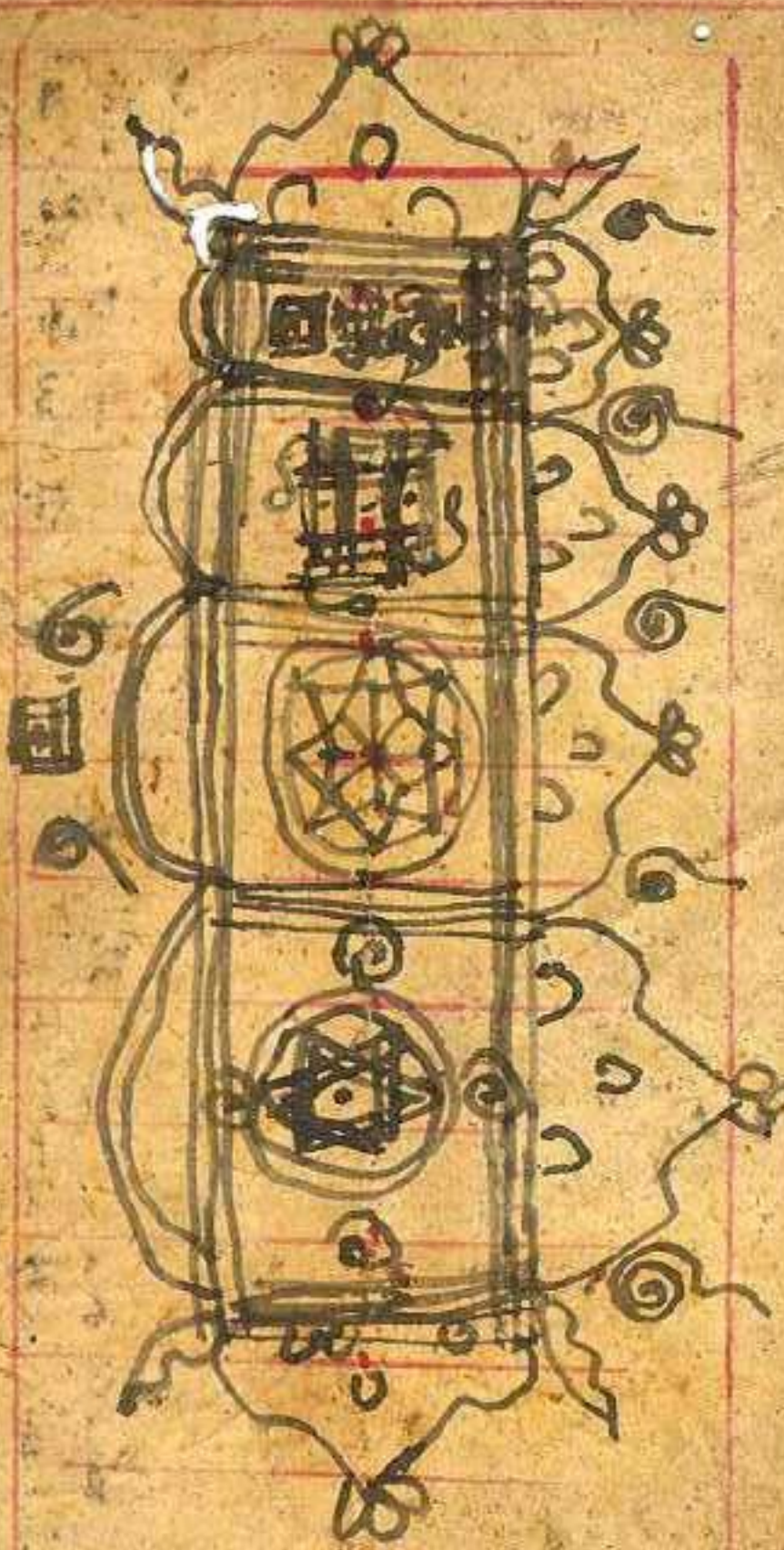
जव

खव

वृयतापय
 क।मगकोति
 जंका
 शायदा
 आल्लउलि
 ल

गुमरुयकासि
 ल।यउकि
 नाकलथन
 कनासाक
 अकासिजल
 जहा

दवाकक्रवा
 थानकमन
 अकल्लसोकाक
 गुमता
 एकाक्षका
 मगकलन



नृश्याद्विर्गया (१५) मयी क्रमस्सखात्वीधवसामवि (१५) र्ग
दवानां द्विर्गया (१५) मयी हि ॥ १५ ॥ ३ साम ० ना अ न व म
सग्निमन्वानरामरु ॥ अग्निर्याज्ञिष्कु ० सु र्ग व क्र
र्गवद रु स्याते रं स्वा रु ॥ १५ ॥ ३ सविता त्वा सवाना
रं सवतामग्नेष्ट रु य र्ग ना रं सामा व न स्यामीनाम ॥
व रु स्याति त्वा व ० ० ० अग्नि आ य न द्र ४ य नु र्या मि ऋ

स र्या व नू (१५) मधममे य मीनाम ॥ १५ ॥ ३ ० ० म न्द वा ॥
॥ १५ ॥ ३ साम स्यात्विषिना सि ग व व म विषि रु या ग
अ न य स्वा फा मा मा य स्वा रु स वि अ स्वा रु व रु
सा ग य स्वा रे अ य स्वा रु य्या मा य स्वा रु (१५) म क
य स्वा रु रं ग म य स्वा रु रु ग म य स्वा रु र्ग र्ग म स्वा रु ॥
॥ १५ ॥ ३ य वि र्ग म क र्ग र्ग म वि र्ग म क र्ग र्ग म क र्ग र्ग म क र्ग

